की रह गई है। जनता की समस्या का समाधान अब तो जलसों-जुलूसों में की जाती है। भव्य आयोजन किये जाते हैं यह बताने के लिए कि वे सभी के लिए कितने फिक्रमंद हैं। तमाम तरह के रथ निकले जाते हैं, करोड़ो रुपये खर्च होते हैं ये बताने के लिये कि सरकार ने अवाम के लिए कितना काम किया है। इसी पर दुष्यंत जी कहते हैं -

ये लोग हवन में यकीन रखते हैं
चलो यहाँ से चलें, हाथ जल न जाए कहीं।

लोकतंत्र में अभिव्यक्ति की आजादी सबको है लेकिन कभी-कभी समय ऐसा आता है जब इससे भी बचना पड़ता है। एक दौर तो वो था जब देश में आपातकाल लागू हुआ था और एक दौर आज का है जब आपातकाल तो नहीं लगा है फिर भी काफी हद तक हालत वैसी ही है

मत कहो आकाश में कोहरा घना है
यह किसी की व्यक्तिगत आलोचना है।

तेरा निजाम है सिल दे जुबान शायर को,
ये एहतियात जरूरी है इस बहर के लिए।

आज किस तरह से साम्प्रदायिकता, धार्मिक-पाखंड और जातिगत हिंसा का बोलबाला दिन-प्रतिदिन तीव्रगति से बढ़ता ही जा रहा है-

गजब है सच को सच कहते नहीं वो
कुरानो उपनिषद खोले हुए हैं,
मजारों से दुआएँ मांगते हो
अकीदे किस तरह पाले हुए हैं।

रूढ़िवादी परंपराओं को चलाने वालों में यह डर हमेशा बना रहता है कि कहीं उस परंपरा को समाप्त करके हमारे रोजी-रोटी को ही खत्म कर दिया जाएगा, इसलिए कुछ लोग अपने फायदे के लिए अंधविश्वास को जंजीरों में जकड़े रखते हैं। इन पुराने डरों को उखाड़ फेंकने के लिए बड़े साहस की आवश्यकता होती है और वर्तमान समय में यह कई रूपों में सामने भी आया है। इसी संदर्भ में दुष्यंत जी का कहना है-

पुराने पड़ गए डर, फेंक दो तुम भी,
ये कचरा आज बाहर फेंक दो तुम भी।

भारतीय लोकतंत्र और भारतीय संविधान विश्व में सबसे आदर्श माना जाता है। भारतीय संविधान की प्रस्तावना में ही वो सारे आदर्श समाहित हैं जो एक अच्छे लोकतंत्र के लिए जरूरी होते हैं। हमारा संविधान प्रत्येक भारतीय की भलाई के दृष्टिकोण से बना है। किंतु व्यवहारिक धरातल पर देखा जाय तो संविधान अपनी जगह है और विशेष व्यक्ति , विशेष वर्ग, विशेष जति और विशेष धर्म अपनी जगह है-

सामान कुछ नहीं है फटेहाल है मगर
झोले में उसके पास कोई संविधान है।

भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी के माध्यम से सरकारी कार्यालयों में लालफीताशाही और अफसरों की मनमानी चरम पर पहुंचने से आज की जनता भी यह जानते हुए कि किस प्रकार से उसे लूटा जा रहा है, फिर भी वह मजबूर है अपने आप को लूटते हुए देखने पर।

करोड़ों रुपये के घोटालों की खबर मीडिया के माध्यम से जनता उतना ही जान पाती है जितना सरकार चाहती है, आज तो मीडिया भी निष्पक्ष रूप से अपना काम नहीं कर रही है। यह हमारे लिए बहुत ही दुःख का विषय है। कितनी ही योजनाएँ सामने आती है, किंतु गरीब तो और गरीब होता जा रहा है। यहाँ पर दुष्यंत जी आज भी सच्चाई के काफी करीब हैं-

यहाँ तक आते-आते सूख जाती हैं कई नदियाँ,
मुझे मालूम है पानी कहाँ ठहरा हुआ होगा।

यह निर्विवाद है कि जितनी योजनायें आमजन के लिए चलाई जा रही है उसका लाभ आंशिक रूप से ही जनता को मिल पाता है। आज भी भारतीय किसान को अपनी मूलभूत समस्यओं से सामना करना पड़ता है। इनकी स्थिति अभी भी वैसी ही है, ये फिर भी अपने स्वाभिमान के साथ मेहनत करते हैं और अपने हक के लिए समय-समय पर आवाज उठाते रहते हैं। लेकिन इन परिस्थितियों से तंग आकर जब इनके पास कोई रास्ता नहीं होता है, तब कई बार ये हताश होकर खुदकुशी का रास्ता अपना लेते है और इनकी ये खुदकुशी, इनके द्वारा चुना गया रास्ता नहीं अपितु व्यवस्था द्वारा सुनियोजित हत्या की साजिश है। इस परिस्थिति को दुष्यंत कुमार की ये पंक्तियां स्पष्ट रूप से व्यक्त करती है-

ये सारा जिस्म झुक कर बोझ से दुहरा हुआ होगा
मैं सजदे में नहीं था आपको धोखा हुआ होगा
कई फाके बिता कर मर गया जो उसके बारे में
वो सब कहते हैं कि ऐसा नहीं, ऐसा हुआ होगा

उपर्युक्त विवरणों के माध्यम से यह कहा जा सकता है कि सामाजिक परिस्थितियों के सन्दर्भ में आम-जनमानस की पीड़ा, उत्तेजना, दबाव, अभाव और उनके सम्बन्धों में तमाम तरह की उलझनों को व्यक्त करते हुए नजर आते हैं दुष्यंत कुमार। अपनी लेखनी के माध्यम से इन्होंने आत्मसंघर्ष और अंतर्द्वंद्व से भरे अनुभवों से दुधारी तलवार का काम लिया है। इन्होंने सर्वहारा वर्ग की रोजमर्रा से जुड़ी हुई समस्याओं, भय, शंकाओं, कानून-व्यवस्था, मानवीय मूल्यों का हनन, सामाजिक विषमता और राजनीतिक धोखाधड़ी को आशावादी स्वरों में एवं भविष्य के प्रति सकारात्मक सोच को प्रस्तुत किया। ■